भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद
(हिन्दी परिशिष्ट)

खंड १५] १९६३ [अंक १–२

अनुक्रमणिका

पृ. सं.

१. भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद की १६ वीं बैठक के उद्घाटन समारोह में ३० दिसम्बर १९६२ को डा० एम० एस० रन्धावा द्वारा स्वागत भाषण। ... iii

२. भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद की सोलहवीं वार्षिक बैठक में जो कि ३० दिसम्बर १९६२ को नयी दिल्ली में हुई श्री० एस० के० पाटील, कृषि एवम् खाद्य मंत्री द्वारा उद्घाटन भाषण। vi

३. "१९६१ की जनगणना में पृथ्वी पर जनसंख्या" ... xii
ए० मित्रा

४. चिरस्थायी फसलों के क्षेत्रीय प्रयोग में अनुकूलतम पूर्व संपरीक्षात्मक समय के बारे में अनुसन्धान ... xiii
टी० पी० अब्राहम तथा जी० ए० कुलकरणी

५. जोतने वालों की संख्या तथा विचरण विश्लेषण के लिये इसके रूपान्तर के सम्बंध में इक्षु पुञ्ज का बंटन ... xiv
आर० एस० श्रीवास्तव

६. रेखीय उपकल्पनाओं की समकालीन समन्वीक्षायें तथा विश्रम्भ अन्तराल आगणन xiv
एम० सी० वर्मा तथा एम० एन० घोष

७. पहले तथा दूसरे अन्तरों पर आधारित कुछ समन्वीक्षा निकषों की अनन्ते स्पर्शीय सापेक्ष दक्षतायें ... xv
ए० आर० कमत

पृ. सं.

८. एक खण्डीय संभाजन विचरण निष्पति बंटन का लैगवायर गुणनफल श्रेणी द्वारा उपसादन ... xv
एम० एल० टीक्

९. भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद १९६१–६२ वर्ष का सचिव द्वारा वार्षिक विवरण xvi

अनुवादक—बी० बी० पी० एस० गोयल

भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद की १६ वीं बैठक के उद्घाटन समारोह में ३० दिसम्बर १९६२ को डा० एम० एस० रन्धावा द्वारा स्वागत भाषण।

श्री० एस० के० पाटिल, भारतीय कृषि-सांख्यिकी संसद के सदस्यों व प्रतिनिधियों और मित्रों,

भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद की १६ वीं वार्षिक बैठक में आप सब का स्वागत करते हुए मुझे अपार हर्ष होता है। कृषि तथा खाद्य मन्त्री श्री० एस० के० पाटिल द्वारा बैठक का उद्घाटन करने के लिये हमारा निवेदन कृपापूर्वक स्वीकार करने के लिये हम उनके अत्यंत आभारी हैं। उन्होंने संसद का इस के प्रधान बनने के निवेदन को भी स्वीकार कर लिया है और हमारा निवेदन स्वीकार करने के उनके सुविचार के प्रति हम आभार अनुभव करते हैं।

मुझे अपने भूतपूर्व प्रधान डा० राजेन्द्र प्रसाद के प्रति जो कि संसद से इसके जन्म से ही संबंधित थे अपना धन्यवाद प्रकट करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। संसद को अपनी संरक्षता अर्पित करने के लिये मैं उन के प्रति अपना अत्याधिक धन्यवाद प्रकट करता हूँ।

संसद से इस के जन्म से ही संबंधित होने के नाते, हमने अब तक जो उन्नति की है तथा भविष्य में हमारी क्या योजनायें होनी चाहियें मैं इस का सूक्ष्म निरीक्षण करना चाहता हूँ। भारतीय कृषि सांख्यिकी परिषद की स्थापना सन् १९४७ में हुई थी और अब वह अपने लाभदायक जीवन के १५ वर्ष समाप्त कर चुकी है।

सांख्यिकी विज्ञान की उन्नति तथा इस के कृषि में प्रयोग का लगभग ३० वर्षों का इतिहास है। १९३० में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने कृषि अनुसन्धान में इसका प्रयोग करने के लिये एक लघु सांख्यिक विभाग की स्थापना की। भारतीय सांख्यिकी प्रयोगशाला को जो लगभग उसी समय प्रो० पी० सी० महालानोबिस द्वारा प्रारंभ की गयी थी परिषद ने आर्थिक सहायता भी दी। भारतीय सांख्यिकी प्रयोगशाला एक विशाल संस्था के रूप में विकसित हो गयी है और अभी हाल ही में उसे एक विश्वविद्यालय की स्थिति प्राप्त हो गयी है और वह सांख्यिकी में उपाधियाँ प्रदान करती है।

भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद (I.C.A.R.) का सांख्यिकीय विभाग भी अब एक पूर्ण अनुसन्धान संस्था के रूप में विकसित हो गया है। अब इस का नाम कृषि सांख्यिक अनुसन्धान संस्था है और जो प्रशिक्षण और अनुसन्धान दोनों में व्यस्त हैं।

नये सांख्यिक विज्ञान ने देश के कृषि अनुसन्धान पर आश्चर्यजनक प्रभाव डाला है। कृषि प्रयोगों में वैज्ञानिक रचना और विश्लेषण एक सार्वलौकिक रीति हो गयी है। फसलों की उत्पत्ति के आगणन के लिये प्रयोगात्मक विधियाँ एक सामान्य रीति के रूप में राज्यों में फसल काटने के अधीक्षणों द्वारा पूर्णतया स्थापित हो गयी हैं। फसलों की उत्पत्ति के आंकड़े आजकल विज्ञान पर आधारित हैं न कि कर अधिकारियों के दार्ष्टिक मतों पर।

पिछले १५ वर्षों में सांख्यिकीय विज्ञानने बहुत उन्नति की है। संपरीक्षण समनुविधानी तथा न्यादर्श अधीक्षणों के सिद्धांतों का विस्तार किया गया है। सन् १९५४ में डा० पी० वी० सुखात्मे की पुस्तक "अधीक्षणों के निदर्शन सिद्धांत" का संसद द्वारा प्रकाशन इस विकास कार्य में एक महत्वपूर्ण चिह्न था। भारत तथा विदेशों दोनों जगह कार्यशील सांख्यिकों द्वारा निर्देशन के लिये तथा विश्वविद्यालयों में पाठ्य पुस्तक के रूप में इस पुस्तक का अत्याधिक प्रयोग होता है। वैज्ञानिक प्रयोग सरकारी अनुसन्धान प्रक्षेत्रों से कृषक के खेतों में स्थानान्तर कर दिये गये हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये नये समनुविधान तथा विश्लेषण की उपयुक्त विधियाँ विकसित की गयी हैं जिससे कि जब प्रयोगों का अभिन्यास कृषक की सामान्य रीति के अनुकूल सुगम बनाया जाय तो परिणामों के निर्वचन की वैज्ञानिक दृढ़ता बनी रहे। कृषि सांख्यिकी अनुसन्धान संस्था के प्रावैधिक पथप्रदर्शन के अन्तर्गत सारे देश में महत्वपूर्ण फसलों पर आजकल लगभग २०,००० प्रयोग इस ढ़ंग के हो रहे हैं और विभिन्न क्षेत्रों में तथा विभिन्न परिस्थितियों में उर्वरकों के अति उत्तम प्रयोग के बारे में मूल्यवान सूचना प्रदान कर रहे हैं। महंगे और अधिक समय लेने वाले पशु-पालन क्षेत्र के अनुसन्धान में सांख्यिकीय विधियों का लाभदायक प्रयोग हुआ है। पशुओं की पौष्टिक आवश्यकतायें तथा नर में श्रेष्ठ पोरषी योग्यता स्थापित करने के लिये गर्भावस्था का अध्ययन करने के लिये प्रयोगात्मक अनुसन्धान आरंभ किये गये हैं और सरकारी प्रक्षेत्रों तथा ग्रामों में दूध की उत्पत्ति का विश्वसनीय आगणन करने के लिये निर्देशन विधियाँ खोजी गयी हैं।

शक्तिशाली योजनाओं की वृद्धि और कृषि विकास को नापने के लिये वैज्ञानिक आधार की आवश्यकता के परिणाम स्वरूप कृषि सांख्यिकों का महत्व और अधिक बढ़ गया है और उन का कार्य अधिक कठिन हो गया है। कृषि के ऊपर नाना प्रकार की प्राकृतिक, प्रावैधिक, आर्थिक और सामाजिक शक्तियों का प्रभाव पड़ता है। नियोजित कार्य के उचित लक्ष्य की ओर उस के प्रतिवचन को सुधारने के लिये किसान की इन शक्तियों के प्रति प्रतिक्रिया का निश्चय करना अत्यंत आवश्यक है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये, किसान के वर्तमान अभ्यासों का अध्ययन करने के लिये वैज्ञानिक निदर्शन हो रहे हैं उदाहरण के लिये उनके खादों और उर्वरकों के प्रयोग से यह जाना जाता है कि किस भावना से प्रेरित हो कर वह खादों का प्रयोग करता है, किन फसलों पर वह उन का प्रयोग करना पसंद करता है, और कितनी मात्रा में वह उन का प्रयोग करता है आदि-आदि। खेती के आर्थिक दृष्टिकोणों जैसे नाना प्रकार के प्रयत्न–जैसे परिश्रम, खाद, बीज और उत्पादन के लिये आवश्यक दूसरे पदार्थ प्रयोग में आने वाले यंत्र और इन सब के द्वारा हुई प्राप्ति और उन के आपस में संबंध का अध्ययन करने के लिये निदर्शन हो रहे हैं। इसी प्रकार के अध्ययन दुग्ध पालन, भेड़ पालन, मुर्गीपालन के क्षेत्र में भी हो रहे हैं। कृषि की आर्थिक अवस्था पर विभिन्न दृष्टिकोण से विचार करने के लिये संस्था ने भारतीय कृषि आर्थिक संस्था और भारत सरकार के साथ सम्मिलित रूप से १९६० में मथेरा में एक परिसंवादका प्रबंध किया था। "कृषि में वित्त संबंधी समस्यायें" शीर्षक के अन्तर्गत इस परिसंवाद का विवरण, कृषि अर्थवेताओं और सांख्यिकों के इस विषय पर वर्तमान विचारों का एक अति उत्तम सारांश है।

निश्चित जिलों में कृषि उत्पादन के प्रयत्नों को शक्तिशाली बनाने के लिये अब जो विशेष कार्यक्रम चल रहा है उसने, किसान की इन एकाग्र प्रयत्नों के प्रति प्रतिक्रिया, वास्तव में किस हद तक उत्पादन पर प्रभाव पड़ता है और किस हद तक कृषक उत्पादन की वृद्धि को बनाये रखने के लिये अपनी क्षमता को बढ़ा रहा है, का अध्ययन करने के लिये सांख्यिकों को एक मूल्यवान अवसर प्रदान किया है। इन अध्ययनों के परिणामों का कृषि में योजनाओं के बनाने पर अत्यधिक प्रभाव पड़ना अनिवार्य है। यह अध्ययन आजकल क्रियाशील हैं और परिणामों का रुचिपूर्वक अध्ययन किया जायगा।

संसद यह अधिवेशन एक भयानक राष्ट्रीय आपत्ति की छाया की उपस्थिति में कर रही है। कृषि क्षेत्र में कार्य की महत्वता केवल सैनिक रक्षा से द्वितीय है। कृषि उत्पादन की वृद्धि के लिये नियोजित कार्य की गति बढ़ाने के लिये कार्यक्षम प्रविधान बतलाकर सांख्यिक अपना सहयोग दे सकते हैं। इस लिये इस अधिवेशन के विवेचनों का एक विशेष महत्व है और मुझे कोई संदेह नहीं है कि आप कुछ लाभदायक प्रस्ताव प्रस्तावित करेंगे।

इन शब्दों के साथ मैं अत्यंत हर्ष के साथ संसद के सचिव डा० पान्से को पिछले वर्ष के संसद के कार्यक्रम का सारांश उपस्थित करने के लिये कहता हूँ।

भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद की सोलहवीं वार्षिक बैठक में जो कि ३० दिसम्बर १९६२ को नयी दिल्ली में हुई श्री० एस० के० पाटील, कृषि एवम् खाद्य मंत्री द्वारा उद्घाटन भाषण।

मित्रों,

भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद की १६ वीं वार्षिक बैठक का उद्घाटन करने के लिये मुझे निमन्त्रित करने पर मुझे प्रसन्नता है। आप को याद होगा कि मैंने दो वर्ष पूर्व इस विशेषज्ञ वर्ग की चौदहवीं वार्षिक बैठक में भाषण दिया था। परन्तु जिस स्थापन में आज हम मिल रहे हैं वह उस स्थापन में बहुत भिन्न हैं। आज हमारी स्वतंत्रता को भय है और हमें इस धमकी का दृढ़तापूर्वक सामना करना है। इस बदले हुए स्थापन से आप जैसे अनुसन्धान कार्यकर्ताओं की महत्वता पहले से भी अधिक बढ़ गयी है। इस शक्तिशाली चुनौती का सामना करने के लिये, जो कि एक कपटी तथा आशंकायुक्त आक्रमणकारी ने हमारे देश के सामने खड़ा कर दिया है, प्रत्येक को अपने क्षेत्र में भली प्रकार तथा शीघ्रता से अपना कार्य करना है। उस क्षेत्र का जो कि सांख्यिकों का परिरक्षण है हमारे देश के प्रतिरक्षा प्रयत्नों के साथ महत्व-पूर्ण सम्बंध है। मुझे इस में कोई सन्देह नहीं है कि ऐसी साधना आपके विमर्शों को व्याप्त करेगी और आप पूर्ण रूप से जागृत हो कर अपने उत्तरदायित्वों पर वापिस जाओगे।

भारत पर चीनी आक्रमण ने हमारे कृषिविकास की समस्त रीतियों तथा प्राथमिकताओं पर प्रभाव डाला है। सशस्त्र सेनाओं तथा नागरिक जन-संख्या के लिये प्रयाप्त मात्रा में खाने, कपड़े तथा दूसरी आवश्यकताओं का प्रदान हमारे सैनिक प्रयत्नों के लिये एक अनिवार्य सहायता है। इस के अनुसार ही हमारी उत्पादन योजनाओं का फिर से संविन्यास हो गया है और उन का निष्पादन उससे कहीं अधिक गति से करना है जो कुछ हमने कभी भी अपना लक्ष्य बनाया या प्राप्त किया है। मैं नहीं कह सकता कि यह संविन्यास कहाँ तक सच्चे आंकड़ों पर या उन साधनों पर निर्भर है जो कि विज्ञान हमें प्रदान करता है परन्तु आप का देश के प्रति यह कर्तव्य है कि आप उस योजना का मार्ग प्रदर्शित करें जिसे मैं आपत्ति कालीन फसल योजना कह सकता हूँ। देश को कई कृषि पदार्थों जैसे अन्न, दालें, तरकारियां, तेल, बीज, तन्तु इत्यादि की और अधिक आवश्यकता है।

उस भूमि तथा उन वायु, जलादि परिस्थितियों की खोज करनी है जो किसी पदार्थ तथा उस पदार्थ के किसी विशेष रूप की उत्पत्ति बढ़ाने के लिये अनुकूलतम है। और इस कार्य में देशी सहन नहीं की जा सकती। इस को रात भर का कार्य समझकर करना होगा। कृषि सांख्यिक के सम्मुख विभिन्न क्षेत्रों में साधनों के निर्धारण का कार्य है। वह उनके उत्तम उपयोग की विधि तथा उन परिणामों से परिचित हैं जिन की कि हम सीमित साधनों के पुनः बंटवारे से आशा कर सकते हैं। वह जानता है कि विभिन्न फसलों के लिये कौन सी भौतिक आदायें ओरो से अधिक महत्वपूर्ण है और इस आपत्ति में पैदावार के तुरन्त लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये किन औद्योगिक उपायों पर अधिक ज़ोर देना है। इस जानकारी तथा अपनी शास्त्रशाला की विधियों की सहायता से उसे बदली हुई परिस्थितियों के अनुसार फसल उत्पत्ति योजनाओं के पुर्ननिर्माण में सहायता देने दो। मुझे कोई सन्देह नही है कि आप की संसद इस बोझ को सहने में सफल होगी।

इतिहास के पृष्ठों में कृषि सदैव उद्योग जननी रही है। उद्योग कपड़ा, तेल और नानाप्रकार की दूसरी मनुष्यों के लिये आवश्यक वस्तुएं उत्पन्न करते है परन्तु उन सब का उद्गम कृषि है। पश्चिम के उद्योग विकसित देश उद्योगों की अपेक्षा कृषि को कुछ कम महत्व नहीं देते। उन देशों में गहन आदान और भारी उत्पत्तियाँ इसका एक जीवित प्रमाण हैं। इस लिये राज्यों में कृषि सांख्यिकों को अपने क्षेत्रों में फसलों का केवल निर्धारण कर लेने पर

संतुष्ट नहीं होना चाहिये। उन्हें यह देखने में, कि भारी उत्पत्तिवाले क्षेत्र तथा उनके क्षेत्र की उत्पत्ति के अन्तर को किस प्रकार पूरा किया जा सकता है, भी उतनी ही रुचि रखनी चाहिये उनको इस अन्तर के कारणों का तथा किस प्रकार प्रयोगों, निदर्शनों और उन के परिणामों के सांख्यिक निर्धारण द्वारा उत्पत्ति की स्थायी रूप से वृद्धि में क्रमिक प्रयत्न किया जा सकता है का अध्ययन करना चाहिये। कृषि में स्थायी सुधार लाने के लिये आपत्तिकालीन फसल योजना एक अति उत्तम ढंग है। विभिन्न आदाओं की परिवर्ती मात्राओं तथा उनके फलस्वरूप उत्पत्तियों में सामान्यकों तथा सम्बंधों का बोध करवा कर कृषि सांख्यिक प्रोद्योग-विज्ञों तथा क्षैत्रिक-विज्ञों का पथ प्रदर्शन कर सकते हैं। यह प्रसक्तता की बात है कि हमारे देश में बहुत से कृषि सांख्यिक कृषि सांख्यिकी अनुसन्धान संस्था के प्रेरक नेतृत्व में इस कार्य में लगे हुए हैं। मुझे आशा है कि इस अनुसन्धान की गति और क्षेत्र का बहुत शीघ्रता से विस्तार होगा।

जहाँ तक कृषि आंकड़ों को एकत्रित करने वाले ढांचे का सम्बंध है हमारा देश एकमात्र देश है। ग्रामीण स्तर पर हमारे पास एक लेखपाल होता है और उसके पास के आंकड़े उच्च स्तर पर होकर समस्त भारतीय आंकड़े बनाते हैं। इस प्रकार पूर्ण भारतीय अंक ग्रामीण आंकड़ों का जोड़ होता है। जब कि इस पद्धति की अपनी विशेषतायें हैं इसके अन्दर यह अवगुण उपस्थित है कि इसमे सारे देश या किसी राज्य में कृषिके वर्तमान स्थितिके सांख्यिकी चित्र के व्यवस्थापन में देरी हो जाती है। इस अवगुण का प्रतिकार इस पद्धति को समाप्त करने में नहीं बल्कि इस के सुधारने में प्रतीत होता है। इसका समाधान यह है कि इस साधन को उचित स्तरों पर प्रबल बनाना है और इसको उन अनावश्यक कार्यों से छुटकारा दिलाना है जिनका कि कृषि आंकडों से कोई सम्बंध नहीं है। यहाँ मेरे लिये संयुक्त राष्ट्र संघ के कृषि तथा खाद्य संघटन (एफ०ए०ओ०) के संसार की कृषि गणना के कार्यक्रम का उल्लेख करना आवश्यक है। यह कार्यक्रम सांख्यिक क्षेत्र में दस वर्षों में एक बार दृष्टिगोचर होता है। सम्भवतः यह उन देशों की आवश्यकताओं के अनुकूल हो जिनके पास हमारे जैसा ढांचा नहीं है। हमारे लिये इस बात पर विचार करना आवश्यक है कि क्या हम अपनी सांख्यिकी पद्धति को इस प्रकार नहीं ढाल सकते जिस से कि जो कुछ और देश दसवर्षीय गणना द्वारा एकत्रित करते हैं वह हमारी पद्धति की स्वयं होनेवाली विशेषता बन जाय। यदि यह

सम्पन्न हो सकता है तो वह हमारी कृषि को विभिन्न प्रकार से सुधारने के लिये व्यापक सांख्यिक आधार प्रदान करेगा।

यह प्रसिद्ध हैं कि विशेषज्ञों में मतभेद होता है और सांख्यिक विशेषज्ञों में और भी अधिक। आपसी जांच और उचित समालोचना विज्ञान के लिये उपयोगी होते हैं क्योंकि वे उस की उन्नति को बढ़ाते हैं परन्तु यह नहीं भूलना चाहिर कि ज्ञान सभी ग्रहण कर सकते हैं उस के ऊपर केवल विशेषज्ञों का अधिकार नहीं है। उदाहरणतया: हमें एक विशेषज्ञ को यह बताने से क्या लाभ कि खाद्यों की उत्पत्ति में हमने वह चिह्न पार कर लिया है जिस पर कि हम प्रयाप्त मात्रा में माल विदेशों में भेज सकते हैं जब कि यह एक स्पष्ट तथ्य है कि आज हमारा बाहर से माल मंगवाये बिना निर्वाह नहीं हो सकता। मुझे आश्चर्य है कि हमें एक विशेषज्ञ के यह बताने से क्या लाभ है कि साधारण भारतीय प्रतिदिन २५ औन्स खाद्यान्न खाता है जब कि हम सब जानते हैं। कि न्यूनपोषाहार न कि मोटापन से हमारे देशबासी पीडित हैं। मुझे उन आंकड़ों का भय है जो कि उस के विपरीत हों जो हमें आंख से दिखायी पड़ता है। मेरे विचार में एक सच्चे सांख्यिक को अपने अंकों पर अन्धाधुन्ध भरोसा नहीं करते जाना चाहिये परन्तु उसे अवश्य ही अपने चारों ओर के तथ्यों से भली प्रकार सचेत होना चाहिये जिससे कि जिस घटना का अध्ययन वह कर रहा है उसे वह अच्छी तरह समझ सके। वास्तव में मैं उन से रसविद होने की आशा नहीं करता जो कि व्यर्थ पदार्थों में से सोना उत्पन्न कर सकता है। परन्तु उसके रसायनज्ञ होने की आशा अवश्य करता हूँ जो कि अपने पदार्थ का, जिस रूप में भी है, के मूल्य का भार निर्धारण कर सकता है और जिसके अन्दर सत्य कहने की शक्ति है। मुझे आशा है कि हमारे अनुसन्धान कार्यकर्ता इस आवश्यकता को समझते हैं।

आप सांख्यिक होने के नाते सत्य को खोजने वाले हैं इसलिये आपको अपनी पूछताछ की विधियों में वैषयिकता, शुद्धता तथा संगति बनाये रखनी चाहिये। उन्हें पूर्वधारित भावों के बुरे प्रभाव से मुक्त होना चाहिये। उन्हें स्थिर नहीं बल्कि गतिशील तथा दृष्ट नहीं सिद्धांतार्थ होना चाहिये। अनुसन्धान कार्यकर्ता को उदारचित्त होना चाहिये, अनुसन्धान में सन्तनन की भावना को उनके विचारों को आकर्षित करना चाहिये। अनुसन्धान का कार्य कभी भी पूरा नहीं होता और उस में कोई भी स्थिति अंतिम नहीं होती। विज्ञान की रीति यह है कि ज्ञान गतिशील होता है और स्थिरता उस का

लक्षण नहीं है। सांख्यिकीय अनुसन्धान के लिये यह और भी अधिक सत्य है। यह तर्क का एक साधन है। यदि इसे भली प्रकार प्रयोग किया जाय तो प्रायः अशुद्ध निर्णयों से बचाव के लिये अति उत्तम ढंग है फिर भी मैं यह चेतावनी अवश्य दूँगा कि यह हर बार ही शुद्ध निर्णय करने का कोई प्रत्याभवन नहीं करता। सब होते हुए भी आप की मिश्रित प्रविधियों में संभाविता सिद्धांत का उतनाही प्रयोग है जितना कि तर्क करने में, निर्णय करने में, तथा दैनिक जीवन की वस्तुओं में है।

मैं सदैव वस्तुओं के गुणों का समर्थक रहा हूँ। गुणों से मेरा अभिप्राय वह सब विशेषतायें हैं जिन के लिये सांख्यिक विभिन्न प्रावैधिक कथन जैसे विश्वसनीयता, सुतथ्यता, व्यापकता, तुलनीयता तथा सामयिक्ता प्रयोग करते हैं। जब तक कृषि सांख्यिकों की दृष्टि गुणात्मक है वह उचित मार्ग पर है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता होती है कि खाद्य तथा कृषि मन्त्रालय के अधीन कृषि सामकों के सुधार के लिये एक समिति सामग्री के लक्षणों को सुधारने की ओर ध्यान दे रही है। प्राथमिक सांख्यिकीय अनुसूची को इस विधि से विकसित करने में कि उस से व्युत्पन्न आंकड़े गुणात्मक निकष की पूर्ति करे, ऐसे प्रयत्न प्रशंसनीय हैं। लेकिन आरंभिक कार्य की समाप्ति के पश्चात यह देखना भी उतना ही आवश्यक है कि प्रयोग के समस्त कार्य में सुधार की भावना पायी जाती है। हमारे देश में कृषि समंक राज्य कृषि सांख्यिकों और दूसरी संस्थाओं का एक सहकारी उपक्रम है। इस सहकारी उपक्रम की सफलता के लिये सब सम्बंधित व्यक्तियों को अत्याधिक सहयोग बढ़ाना उन का परम कर्तव्य होना चाहिये। मुझे आशा है कि कोई भी इस विषय में कमी नहीं रखेगा।

गुणों की बातचीत करते हुए मुझे कृषि मूल्यों के आंकडों कि ओर भी संकेत करना चाहिये क्योंकि बाज़ार व्यवहार पर नियंत्रण रखने के लिये वर्तमान आपत्तिकाल में उसने अत्यधिक महत्व प्राप्त कर लिया है। हम यह जानते हैं कि मूल्य भिन्न होते हैं केवल गुण और भेद के कारण ही नहीं बल्कि स्थान और दिन के समय के अनुसार भी जब कि वह एकत्रित किये जाते हैं। यह विशेषकर फुटकर बिक्री की वस्तुओं के मूल्य के लिये सत्य है। यदि विश्वसनीय मूल्य सामग्री एकत्रित करने का कोमल कार्य किसी अनिपुण व्यक्ति को सौप दिया जाय–अनिपुण से मेरा तात्पर्य उस व्यक्ति से है जिस का दिन प्रति दिन बाज़ार की परिस्थितियों से सम्बंध न हो–तो ऐसी सामग्री के लभ के स्थान पर हानि पहुँचाने की अधिक संभावना है। उनके उसी

उद्देश्य को हानि पहुँचाने की संभावना है जिस के लिये कि उन को एकत्रित करना है। अनिपुण व्यक्ति द्वारा आंकड़ों के एकत्रीकरण ने इस भावना को जन्म दिया है। कि आंकड़े मिट्टी के समान हैं जिन से मनुष्य अपनी इच्छानुसार भगवान या शैतान बना सकता है। मैंने मूल्य के आंकड़ों की ओर यहाँ पर विशेषकर संकेत किया है क्योंकि वह हमारी मितव्ययता, उत्पादन, आय, भृति, उद्गमों के निर्धारण और मैं यह कह सकता हूँ कि देश की राजनैतिक और आर्थिक स्थिरता से भी सम्बंधित है।

मैं और अधिक नहीं कहना चाहता। मुझे विश्वास है कि संसद का वर्तमान अधिवेशन बहुत लाभदायक होगा। हमारी जनसंख्या के १९६१ की जनगणना के अनुसार सारी पूर्व आकांक्षाओं के अतिक्रमण के कारण हम उत्सुकतापूर्वक श्री० मित्रा के भाषण को सुनने की प्रतीक्षा कर रहे हैं जिस में कि उन्होंने जनगणना की आधुनिक खोजों, अनुसन्धानों और हमारे कृषि विस्तार पर उस के प्रभावों का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। अनेक प्रावैधिक लेखों के अलावा जिन पर कि वर्तमान अधिवेशन में विवाद होगा आप ने दो परिसंवादों का प्रबन्ध किया है—एक, भारतवर्ष में कृषि सांख्यिकी की वर्तमान स्थिति और भविष्य में उसके कार्यों पर और दूसरा 'कृषि में दीर्घकालीन आवश्यकतायें तथा उनकी पूर्ति की योजनाओं' पर है। इन विषयों का चुनाव समय के अनुकूल है। मुझे कोई सन्देह नहीं है कि इस अधिवेशन में हुए विवाद कृषि सामकों के आधार और गुणों तथा आर्थिक योजना के लिये आवश्यक सांख्यिक साधनों के सुधार में बहुत अधिक सहायक होंगे। मैं यह देख कर बहुत प्रसन्न हूँ कि डा० पी० वी० सुखात्मे जिन का कि सांख्यिक संसार में अपना एक विशेष स्थान है, खाद्य उत्पादन योजना की पुनः पूर्वीय स्थिति स्थापित करने की आवश्यकता पर एक विशेष भाषण देंगे। जिन परिस्थितियों में भारतवर्ष आज है और आने वाली में यह विषय विशेषकर उचित है क्योंकि यह उस व्यक्ति का है जिसे कि अनेक विकसित हुए और विकसित हो रहे देशों का अनुभव है। मुझे कोई सन्देह नहीं है कि यहाँ पर यह हमारे विशेषज्ञों के लिये अत्यंत लाभकारी होगा। संभवतः मैं आप के विवेचनों में उपस्थित न रह सकूँ लेकिन उनमें अपनी अत्यधिक रुचि का मैं आप को विश्वास दिलाता हूँ।

मैं आप के संसद के सोलहवें अधिवेशन का अब उद्घाटन करने में प्रसन्नता का अनुभव करता हूँ।

"१९६१ की जनगणना में पृथ्वी पर जनसंख्या"

ए० मित्रा

भारत सरकार के महापञ्जीकार तथा जनगणना आयुक्त

भारत सरकार के महापञ्जीकार तथा जनगणना आयुक्त श्री० ए० मित्रा ने एक बहुत सूचनात्मक प्रावैधिक अभिभाषण, "१९६१ की जनगणना में पृथ्वी पर जनसंख्या" पर किया। श्री० मित्रा ने १६ निर्वाचित जिलों की जनगणना सामग्री का आवरण करते हुए एक प्रारूपिक अध्ययन के परिणाम प्रस्तुत किये जिससे यह ज्ञात होता था कि १९६१ की जनगणना के अनुसार पृथ्वी पर मनुष्यों के बारे में किस प्रकार की सूचना की आशा की जा सकती है। व्यक्ति, जिस पर जनगणना साधारणतया आधारित होती है, के विपरीत ग्रह को इकाई मानकर एकत्रित किये गये आंकड़ों पर आधारित ग्रह्यों के ग्रह उद्योग तथा कृषि संबंधी कार्यों का लेखा १९६१ की जनगणना का एक महत्वपूर्ण लक्षण था। उन्होंने कुल २३ सारणिया प्रस्तुत की और कुछ सीमा तक उनका पर्यालोचन भी किया। इन सारणियों के द्वारा उन्होंने ग्रह के विभिन्न दृष्टिकोणों, जैसे परिमाण, संरचना, व्यवसाय जैसे कृषि तथा ग्रह उद्योग, कृष्ठ भूमि का स्वामित्व, अनेक परिणामों की भूमि रखनेवाले कृषकों की प्रतिशतता इत्यादि पर प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त दक्षिणी भारत के कुछ जिलों मे भूमि पर अधिकार, प्रतिग्रह भूमि क्षेत्र का माध्या परिमाण, उन ग्रहों की प्रतिशतता जो पांच प्रहल से कम भूमि में कृषिकरण करते हैं, परिवार के कार्यकर्ताओं का विस्तृत विवरण, कृषि में व्यस्त समस्त कार्यकर्ताओं को तुलना में लिंग तथा व्यवसाय के अनुसार अवकीत कार्यकर्ताओं की प्रतिशतता। इत्यादि से संबंधित स्थानीय पदों पर सूचना प्रदान करने वाली कई और सारणियां थीं। उन्होंने एक महत्वपूर्ण उपसंहार प्रस्तुत किया, वह था कि, ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्यक्ष रूप से निरुद्योगी मनुष्य शक्ति वास्तव में एक कृषि आरक्ष है जिस को कि आर्तव कार्यों के लिये प्रयोग करना है और इस मनुष्य शक्ति को नगरीय उद्योगों की ओर ले जाने की अपेक्षा इन को ग्रामीण क्षेत्रों में ही अतिरिक्त कार्य प्रदान करना वांछनीय है।

चिरस्थायी फसलों के क्षेत्रीय प्रयोग में अनुकूलतम पूर्व संपरीक्षात्मक समय के बारे में अनुसन्धान

टी० पी० अब्राहम तथा जी० ए० कुलकरणी
कृषि अनुसन्धान सांख्यिक संस्था

सारांश

प्रयोग आरंभ करने के पूर्व सामग्री एकत्रित करने के लिये अनुकूलतम आवश्यक पूर्व परीक्षात्मक वर्षों का, जिस से कि सहविचरण द्वारा सपरीक्षात्मक विभ्रम को कम करने के लिये सामग्री को प्रयोग में लाया जा सके, किन्हीं दो वर्षों की उत्पत्ति में सहसम्बंध के लिये कुछ सहसम्बंध प्रतिकृतियों के लिये अनुसन्धान किया गया है। किन्हीं दो वर्षों में सहसम्बंध के आदर्शों के लिये उत्पत्ति पर विचार किया गया है। ये हैं--(१) किन्हीं दो वर्षों में स्थिर सहसम्बंध तथा (२) किन्हीं दो वर्षों की उत्पत्तियों में सहसम्बंध घटता जाता है जैसे जैसे उन दो वर्षों के मध्य में वर्षों की संख्या बढ़ती जाती है यानि $दा_{शष} = अ+आ दि^{ष-श}$, जिस में कि $दा_{शष}$ शवें तथा षवें वर्षों की सामग्री में सहसम्बंध का मापक है, के रूप का एक आदर्श है। २० वर्षों की नारियल वृक्षों की उत्पत्ति सामग्री को जांचने से प्रतीत हुआ कि सहसम्बंध ऊपर लिखित आदर्शों में से दूसरे आदर्श के साथ बहुत निकटतम अन्वायोजन करते हैं। यह पता चला है कि सपरीक्षात्मक आवर्तकाल से तत्कालीन पूर्व दो सपरीक्षात्मक आवर्तकालों की सामग्री सहविचरण विश्लेषण के लिये प्रयाप्त है। इस विधि के परिणाम स्वरूप सूचना में १०० प्रतिशत लाभ हुआ।

जोतने वालों की संख्या तथा विचरण विश्लेषण के लिये इसके रूपान्तर के सम्बंध में इक्षु पुञ्ज का बंटन

आर० एस० श्रीवास्तवा

भारतीय इक्षु अनुसन्धान संस्था, लखनऊ

सिद्धान्ततः यह बात मालूम हुई है कि जोतने वालों की संख्या के सम्बंध में इक्षु पुञ्ज का बंटन एक विलोम द्विपद (Binomial) बंटन है। विभिन्न प्रकार के बाहर बड़े न्यादर्शों से लिये गये अवलोकनों से पता चला है कि यह सार्थक मात्रा में इस प्रतिकृति के अनुकूल हैं। एक पुन्ज में जोतने वालों की संख्या 'द' के विचरण विश्लेषण में सुधार की अवाश्यकता है। अवलोकित मूल्य को पहले अज्या $^{-1}\sqrt{\text{द}}$ (या अज्या $\sqrt{\text{द}+0\cdot5}$ के यदि 'द' छोटा हो तो) के रूप में बदलना और फिर इसका विश्लेषण करना चाहिये। छोटे न्यादर्शों के लिये यह केवल सत्य ही नहीं परन्तु भिन्नान्तरों की अधिक सुतथ्यता प्रस्तुत करने के लिये आवश्यक भी है।

रेखीय उपकल्पनाओं की समकालीन समन्वीक्षायें तथा विश्रम्भ अन्तराल आगणन

एम० सी० वर्मा तथा एम० एन घोष.

सारांश

इस लेख में, एकरेखीय प्रतिकृति में प्राचलों के समूह के रेखीय वृत्तों के लिये समकालीन विश्रम्भ अन्तराल आगणन के प्रश्न पर विचार किया गया है, कुल मिला कर विश्रम्भ मापांक सहित जैसे शैफे के १९५३ के लेख में दिया गया है। यह दर्शाया गया है कि शैफे की विधि की तुलना में जहाँ पर प्राचलों के सभी रेखीय वृत्तों पर विचार किया गया है, यह लघु है। सामान्य चा-समन्वीक्षा के विस्तारार्थ प्राचलों के समूह के लिये अनुरूप समन्वीक्षाओं पर भी विचार किया गया है।

पहले तथा दूसरे अन्तरों पर आधारित कुछ समन्वीक्षा निकषों की अनन्ते स्पर्शीय सापेक्ष दक्षतायें

ए० आर० कमत

गोरवले संस्था, पूना (भारत)

श्रैणिक सहसम्बंध तथा प्रवृत्ति के लिये कुछ समन्वीक्षा निकषों की अनन्ते स्पर्शीय सापेक्ष दक्षता सहसम्बंध तथा प्रवृत्ति के कुछ विकल्प उपकल्पनाओं के आधीन विचार किया गया है।

एक खण्डीय संभाजन विचरण निष्पति बंटन का लैगवायर गुणनफल श्रेणी द्वारा उपसादन

एम० एल० टीक्

भारतीय सांख्यिकी संस्था

सारांश

एक खण्डीय संभाजन के बंटन के लैगवायर गुणनफल श्रेणी विस्तार के प्रथम कुछ पदों को समग्र संचकों के रूप में आठवीं श्रेणी तक निकाला गया है। विचरण निष्पति का बंटन स्पष्ट रूप से दिया गया है।

भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद

१९६१–६२ वर्ष का सचिव द्वारा वार्षिक विवरण

संसदीय परिषद की ओर से ३० जून १९६२ को समाप्त होने वाले वर्ष में संसद के कार्यों का विवरण आपके सम्मुख उपस्थित करने में मुझे अत्यंत हर्ष होता है। इस वर्ष में संसद के सदस्यों की संख्या १८४ थी। सदस्यता सूची में ६ सदस्य सम्मानार्थ, ७ संरक्षक, ४० स्थायी तथा १२५ साधारण सदस्य थे।

कृषि सांख्यिकों तथा दूसरे कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त जो कि कृषि सम्बंधी सांख्यिकों के विकास में रुचि ले रहे हैं इसकी सदस्यता भारत के समस्त भागों में से तथा विदेशों से आती है और समस्त कृषि संस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों में फैली हुई है। इस की नियमित सदस्यता के अतिरिक्त संसद पत्रिका का चन्दा डाक द्वारा भेजने वालों की एक सहायक सूची बनाये रखती है जिस में कि देशी तथा विदेशी महत्वपूर्ण अनुसन्धान संस्थायें भी सम्मिलित हैं। वर्तमान वर्ष के भारतीय तथा विदेशी ग्राहकों की संख्या पिछले वर्ष के १३६ सदस्यों की तुलना में १४६ थी।

अपने जन्म से ही संसद राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद को अपना प्रधान बनाने के अधिकार का उपभोग करती रही है। भारत के राष्ट्रपति होने के नाते उनके अनेक कर्तव्यों के बावजूद वह संसद के कार्यों में गहरी रुचि रखते रहे और संसद के उद्देश्यों की उन्नति में संसद को उनसे बडी प्रेरणा मिलती रही। संसद उनकी आभारी है और उनके प्रति अपनी अत्याधिक कृतज्ञता प्रकट करती है।

तब से संसद के प्रकाशन कार्यक्रम में संसद की पत्रिका का १३ वाँ खण्ड (अंक १ और २) प्रकाशित हुआ है। खण्ड की प्रतियां आपके सम्मुख रखी हुई हैं और संसद की पत्रिका का १४ वाँ खण्ड जल्दी ही निकलनेवाला है। पत्रिका की छपाई के संबंध में वर्तमान प्रबन्ध जारी है।

संसद की पत्रिका में एक नया विषय "समाचार तथा टिप्पणियाँ" प्रारम्भ किया गया है। इस शीर्षक के अन्तर्गत जिस प्रकार का साहित्य प्रकाशित किया जा सकता है, को पत्रिका के हाल ही के खण्डों में दरशाया गया है।

सभी सदस्यों से निवेदन है कि इस नये कार्य को सफल बनाने के लिये सहयोग दें तथा "समाचार तथा टिप्पणियों" के लिये संसद को समय-समय पर लेख भेजें। आपस में पत्रिका बदलने के लिये जो प्रार्थनायें आ रही है उनसे अनुमान लगाकर यहाँ इसकी पुनरावृत्ति करना अनावश्यक न होगा कि संसद की पत्रिका की भारत तथा विदेशों की सुप्रसिद्ध संस्थाओं तथा अनुसन्धान कार्यकर्ताओं द्वारा भारी प्रशंसा की जाती है। इस समय १२ पत्रिकायें संसद की पत्रिका के बदले में प्राप्त की जाती हैं। वर्तमान वर्ष में पत्रिका बदलने के लिये संसदीय परिषद को दो प्रार्थनायें और प्राप्त हुई हैं। बदले में आने-वाली पत्रिकायें कृषि सांख्यिकीय अनुसंधान संस्था (आई० ए० आर० एस०) पुस्तकालय में रखी जाती हैं और संसद के सदस्य उनका अध्ययन कर सकते हैं। हिन्दी परिशिष्ट अब भी पत्रिका की एक विशेषता है। इस विषय के वैज्ञानिक विवादों को राष्ट्रभाषा हिन्दी में संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने का यह संसद का एक प्रयत्न प्रस्तुत करता है। पत्रिका के प्रकाशन के लिये प्रयाप्त धन की समस्या अब भी संसद की कार्यकारिणी सभा का ध्यान आकर्षित करती है क्योंकि ऐसी प्रावैधिक पत्रिका के प्रकाशन की लागत अधिक है। इस के प्रकाशन का निर्वाह अधिकतर केन्द्र, राज्य सरकारों तथा दूसरे राष्ट्रीय संगठनों से मिलने वाले अनुदानों से होता है। वर्तमान वर्ष में सहायता में मिलनेवाले अनुदान उड़ीसा, उत्तरप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र सरकारों तथा राष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्था द्वारा दिये गये हैं। संसद इन संगठनों से मिलनेवाली आर्थिक सहायता के लिये कृतज्ञता प्रकट करना चाहती है। सदस्यों की याद होगा कि सांख्यिकी अनुसन्धान की उन्नति के विचार से अपनी पत्रिका में छपनेवाले श्रेष्ठ तथा उच्च कोटि के लेखों के लिये पारितोषक अर्पण करनेवाली एक योजना की संसद ने घोषणा की थी। इस पारितोषक लेनेवाले व्यक्तियों का निर्णय निरीक्षकों की एक सूची द्वारा किया जाता हैं जो कि अन्यान्य क्षेत्रों में विशेषज्ञ होते हैं।

लेख जिस का शीर्षक "असंमित तथा संमित कारकीय समनुविधानों के लिये समाकुलन का गणीतीय सिद्धांत" और जो कि संसद की पत्रिका के ११ वें खंड में प्रकाशित हुआ था के लिये डा० के० किशन तथा डा० जे० एन० श्रीवास्तव को संसद की १५ वीं वार्षिक बैठक में ५०० रू० का सम्मिलित पारितोषक अर्पित किया गया था। उन लेखों पर आधारित जो कि संसद की पत्रिका के १० वें तथा ११ वें खंड में प्रकाशित हुए थे सांख्यिकीय सिद्धांतों के निरीक्षकों की सूची ने निर्णय दिया था कि डा० ए० आर० राय तथा

डा० एस० जी० मोहन्ती को उन के विशिष्ट लेख जिस का शीर्षक है "सामान्य सामग्र समान्गन्तराल सहित न्यादर्श मध्यका द्वारा परिभाषित χ^2 का बंटन", तथा जो संसद की पत्रिका के १० वें खंड में छपा था, के लिये एक पारितोषक अर्पित किया जाये। उन निर्णयों के आधार पर संसदीय परिषद ने डा० ए० आर० राय तथा डा० एस० जी० मोहन्ती को एक ५०० रू० का सम्मिलित पुरस्कार अर्पित करने का निश्चय किया है। इस पारितोषक को उन्हें आपस में बराबर-बराबर बांटना होगा। पारितोषक को उद्घाटन सम्मेलन में अर्पित करने का विचार किया गया है। जिन निरीक्षकों ने खंड १० वें तथा ११ वें में छपें हुए लेखों पर निर्णय करने में संसद की सहायता की वह थे डा० आर० सी० बोस, प्रो० ओ० केम्पथार्न, प्रो० डब्ल्यू० जी० काकरन, डा० डब्ल्यू० जी० मैडो, डा० डी० जे० फिने, डा० एस० एफ० राबिनसन, प्रो० एच० क्रेमर, डा० आर० आर० बहादुर। संसद को इन सब के प्रति कृतज्ञता व धन्यवाद प्रकट करने में हर्ष होता है।

संसद का प्रकाशन "अधीक्षणों के निदर्शन सिद्धान्त तथा उन के प्रयोग" (सैम्पलिंग थ्योरी आफ़ सरवैज़) डा० पी० वी० सुखात्मे द्वारा रचित की अब भी प्रयाप्त माँग है। पुस्तक के नये पुनः प्रकाशन का अधिकतर माल जो कि आयवा राज्य विद्यालय (एम्स, आयवा, यू०एस०ए०) के छापाखाने में छपा था बिक गया है। पुस्तक की १५० प्रतियों का नया प्रेषण तब से आयवा राज्य कालेज छापाखाने से आ चुका है। अब पुस्तक का पुनः निरीक्षण किया जा रहा है और एक पुनः निरीक्षित संस्करण निकट भविष्य में ही प्रकाशित होने की आशा है। एक पुर्तगाली प्रकाशक के निवेदन पर पुस्तक का पुर्तगाली में अनुवाद करने तथा इस की ४,००० प्रतियों का पुर्तगाली में छपने का प्रबन्ध कर दिया गया है।

पंजाब राज्य के निमंत्रण पर संसद की १५ वीं वार्षिक बैठक २६ दिसम्बर १९६१ से २९ दिसम्बर १९६१ तक चण्डीगढ़ में हुई। इसके अधिवेशन का उद्घाटन पंजाब के राज्यपाल श्री० एन्० वी० गाडगिल द्वारा किया गया था। योजना तथा वित्त मंत्री डा० गोपीचन्द भार्गव ने उद्घाटन भाषण दिया जिस के पश्चात पंजाब के मुख्य मंत्री सरदार प्रताप सिंह कैरो द्वारा स्वागतीय अभिभाषण किया गया। उद्घाटन समारोह में "भूमि-सम्बन्धी सुधारो" पर प्रो० डी० जी० कार्वे द्वारा प्रावैधिक भाषण किया गया। "सिंचाई योजनाओं से लाभ के मूल्यांकन" पर तथा "खाद्य उपभोग अधीक्षणों" पर दो परि-

संवादों का अधिवेशन में प्रबन्ध किया गया था। पहिले परिसंवाद की अध्यक्षता पंजाब सरकार के कृषि उपदेष्टा डा० बी० एन० उपल द्वारा की गयी थी जब कि दूसरे की अध्यक्षता खाद्य तथा कृषि संगठन (एफ०ए०ओ०), रोम के सांख्यिक विभाग के निदेष्टा डा० पी० वी० सुखात्मे द्वारा की गयी थी। "सिचाई योजनाओं के लाभ के मूल्यांकन" पर हुए परिसंवाद में भाग लेने वाले थे डा० डी० के० मल्होत्रा, तथा सर्व श्री० जे० के० जैन, आर० गिरि, जी० आर० अयाचित तथा ए० वी० के० शास्त्री। "खाद्य उपभोग अधीक्षणों" पर दूसरे परिसंवाद में भाग लेनेवाले थे डा० वी० जी० पान्से, डा० एस० सी० चौधरी, डा० जे० सत्यनारायण, सर्व श्री० रामशरण तथा डी० सिंह। पंजाब सरकार ने खाद्य तथा कृषि संगठन (एफ०ए०ओ०) के फसल आगोप के विशेषज्ञ डा० टी० यामूची द्वारा 'फसल आगोप तथा कृषि पुनर्निर्माण' पर एक लोकप्रिय व्याख्यान किया गया था। दूसरा प्रसिद्ध व्याख्यान 'कृषि सम्बन्धी योजना' बनाने पर डा० वी० जी० पान्से, खाद्य तथा कृषि संगठन (एफ०ए०ओ०) के कृषि गणना के क्षेत्रीय उपदेष्टा द्वारा दिया गया था। इस के अतिरिक्त बैठक में दो अधिवेशन लेखपठन पर हुए। कुल मिलाकर २१ लेख प्रस्तुत किये गये थे। बैठक का प्रबन्ध स्वागत समिति द्वारा जिस के अध्यक्ष डा० गोपीचन्द भार्गव तथा संगठन सचिव श्री० पी० एस० सहोटा थे किया गया था। संसद के सामान्य वर्ग ने स्वागत समिति तथा पंजाब सरकार के प्रति संसद की बैठक चण्डीगढ़ में बुलाने के लिये श्रेष्ठ प्रबन्ध करने के लिये कृतज्ञता तथा धन्यवाद का अभिलेख किया है।

संसद के १९६१ तथा १९६२ वर्ष के लिये अंकेक्षित हिसाब किताब का विवरण आपके सम्मुख रखा हुआ है। पहले की भांति अंकेक्षण एक व्यवसायिक अंकेक्षक द्वारा किया गया है। पहले वर्षों की भांति संसद की वार्षिक बैठक में भाग लेनेवाले सदस्यों तथा प्रतिनिधियों को संयान अधिकारियों ने किराये में छूट देना स्वीकार कर लिया था। संसद संयान अधिकारियों के प्रति अपना धन्यवाद प्रकट करती है।

संसद का पिछले वर्ष का कार्य जिसका कि मैंने ऊपर संक्षिप्त सारांश दिया है संसद की कार्यकारिणी सभा के समस्त सदस्यों की लगातार सहायता से, तथा हमारी कार्यकारिणी के प्रधान डा० एम० एस० रन्धावा के पथप्रदर्शन और उत्साह से संभव हुआ।

भारत और विदेशों से बहुत से व्यक्तियों ने इस की पत्रिका में प्रकाशित होने के लिये प्राप्त लेखों का निर्णय करने में संसद की सहायता की है। संसद उन के प्रति अपना धन्यवाद प्रकट करके बहुत प्रसन्न है। संसद पत्रिका का हिन्दी परिशिष्ट तैय्यार करने में श्री० टी० प्रसाद और श्री० बी० बी० पी० एस० गोयल की सहायता के लिये उनके प्रति कृतज्ञ है।

अंत में संसद के कार्य में अत्यधिक रुचि लेने के लिये संसद के सचिवालय और विशेषकर श्री० सदानन्द के प्रति मुझे आभार प्रकट करना है। उनका अनन्त प्रयत्न और परिश्रम सचिव कार्य के शान्त और कार्यक्षम सम्पादन से प्रकट होता है। संसद के प्रति अपनी मूल्यवान सेवा करने के लिये उनके प्रति अपना धन्यवाद प्रकट करने में संसद प्रसन्न होती है।

भारतीय कृषि

१९६१–६२ वर्ष के लिये छपाई निधि का

आगम	रू० नपै०	रू० नपै०
प्रारम्भिक शेष द्वारा :		
हस्तगत रोक	५४ २३	
भारतीय राजकीय अधिकोष, नई दिल्ली के पास चल लेखा में शेष रोक	७,३०१ ३५	
राष्ट्रीय बचत प्रमाण पत्र	१०,००० ००	
		१७,३५५ ५८
पुस्तकों की बिक्री द्वारा :		
वर्तमान वर्ष में	१,९९४ ७३	
गत वर्ष की गई बिक्री की प्राप्ति	२४ ५६	
		२,०१९ २९
संसद का धन प्रकाशन प्रणीवि लेखा में समाकलित किया हुआ पाया गया	२५६ ००	
		२५६ ००
योग		१९,६३० ८७

६४, रीगल भवन,
नई दिल्ली,
दिनांक २८–१२–१९६२.

हस्ताक्षरित
शासन प्राप्त आंकिक

सांख्यिकी संसद, पूसा संस्था, नई दिल्ली

आगम तथा शोधन लेखा

शोधन	रू०	नपै०	रू०	नपै०
व्ययों द्वारा :				
डाक व्यय	५१	६२		
मज़दूरी तथा वाहन व्यय	२	७५		
विभिन्न व्यय	२	००		
अधिकोष व्यय	३	२५		
			५९	६२
अधिकार शुल्क जो कि गत वर्ष संसद लेखा में विकलित हुआ था के समानान्तरण द्वारा			३,८००	०५
पुस्तकों की बिक्री से प्राप्ति द्वारा जो कि भूल से ससंद लेखा में समाकलित हुए			९४२	५७
संवरण शेष द्वारा :				
हस्तगत रोक	४७	८६		
भारतीय राजकीय अधिकोष, नई दिल्ली में चल लेखा में	४,७८०	७७		
राष्ट्रीय बचत निर्माण पत्र	१०,०००	००		
			१४,८२८	६३
योग			१९,६३०	८७

भारतीय कृषि

३०–६–१९६२ को समाप्त हुए वर्ष के लिये

आगम	रू०	नपै०	रू०	नपै०
प्रारंभिक शेष द्वारा :				
हस्तगत रोक	९४	९६		
भारतीय राजकीय अधिकोष में चल लेखा शेष	५,९८५	८०	६,०८०	७६
सदस्यता वृत्ति द्वारा :				
आजीवन सदस्यता			१८९	००
साधारण सदस्यता—				
(क) पुरातन अप्राप्त राशि की प्राप्ति				
१९५८–५९ रू० ३६ ००				
१९५९–६० रू० ७४ ४३				
१९६०–६१ रू० १२८ ४२	२३८	८५		
(ख) वर्तमान वर्ष	१,१११	९२		
(ग) आग्रिम वृत्तियाँ १९६२–६३	१६६	७४	१,५१७	५१
पत्रिका की बिक्री द्वारा			३३७०	७१
सावधि निक्षेप पर व्याज द्वारा प्राप्त चल लेखा में जमा किया गया			०	१०
सहायक अनुदान द्वारा प्राप्त :				
महाराष्ट्र राज्य	५००	००		
उड़ीसा राज्य	१,०००	००		
उत्तरप्रदेश राज्य	१,०००	००		
गुजरात राज्य	१५०	००	२,६५०	००
पिछले वर्ष के अधिकार शुल्कों के शोधन के कारण प्रकाशन प्रणीवि द्वारा प्रत्यादत्त राशि			३,८००	०५
प्रकाशन प्रणीवी की और दातव्य राशि	९४२	५७		
कम : प्रकाशन प्रणीवि द्वारा दातव्य राशि	२५६	००	६८६	५७
विलम्बित लेखा द्वारा (रसीद अपठनीय)			१९	८६
योग			१८,३१४	५६

६४, रीगल भवन, नई दिल्ली,
दिनांक २८–१२–१९६२.

हस्ताक्षरित
शासन प्राप्त आंकिक

सांख्यिकी संसद, पूसा संस्था, नई दिल्ली

आगम तथा शोधन लेखा

शोधन	रू०	नपै०	रू०	नपै०
पत्रिका की छपाई के बेंगलोर प्रेस को दिये :				
खण्ड १२ अंक २ के लिये (गत वर्ष)	२,८३७	०९		
प्रचलित वर्ष	२,३६३	७९	५,२००	८८
कर्मचारी वर्ग के वेतनार्थ			१,६८१	००
बैठक व्यय द्वारा	२,६२१	८०		
कम : पंजाब सरकार द्वारा विशेष अनुपान	२,०००	००		
	६२१	८०		
कम : गत वर्षों के शोधन द्वारा प्रत्यर्पण	४७	००	५७४	८०
भारतीय कृषि अर्थशास्त्र संसद, बम्बई को विमर्श गोष्ठी व्यय हेतु अंश दान			१,६८७	४५
निर्णयकों की वृत्तियों द्वारा	५००	००		
पारितोषक अर्पण द्वारा	५००	००		
अनुसन्धान—सहायतार्थ	१५३	४८	१,१५३	४८
अन्य व्ययों द्वारा :				
डाक व्यय, पी० वी० नवीनीकरण तथा दूरभाष यन्त्र व्यय द्वारा	५१३	५९		
लेखन सामग्री तथा छपाई द्वारा	२८०	३९		
संबंधन वृत्तियाँ	११०	८५		
अधिकोष व्यय	४४	०२		
संचार भाटक	१५	३०		
वाहन व्यय	४५	२०		
विविध व्यय	५६	९१	१,०६६	२६
गत वर्ष के लिये अंके क्षण वृत्तियों द्वारा			१५०	००
संवरण शेष द्वारा :				
हस्तगत रोक	९६	८२		
भारतीय राजकीय अधिकोष—नई दिल्ली के पास शेष रोक	६,६६४	१५		
संग्रहण करने वाले धनादेश	३९	७२	६,८००	६९
योग			१८,३१४	५६